KANHYA LAL

साहब मैं सन् 1984 में आया। मैं आजमगढ़ में रहता था। मैं 10 साल का था, तभी मेरी तबियत खराब हो गई तो यहाँ ईटानगर में रहा। तबियत ठीक हुआ तीन चार साल तक पढ़ाई की, पाँच तक पढ़े। गरीबी है परिवार ज्यादा है माँ-बाप कमाने वाले एक जन है। हमारी चार-पाँच बहने है, एक छोटा भाई है। कमाने के लिए मैं और बड़ा भाई है। पिताजी जो राजगिरी का काम करते है। ये सब सोच के पढ़ाई हमने छोड़ दिया। उसके बाद यहाँ हमने 20 नंबर में काम किया जूते का। यहाँ हमें 80 रु० तंखवा मिलती थी। कुछ दिन चलता रहा ठेकेदारी काम था इस तरह चलता रहा और ठेकेदार बनगए। फिर हमनें शास्त्री नगर में काम किया, दो चार महिनें वो भी बंद हो गया। उसके बाद हम सुदर्शन पार्क गए। पंखे का काम होता था वहाँ पर आठ-नौ महिने काम किया वहाँ कुछ अच्छा नहीं लगा मालिक लोग ऐसे थे काम करवाते रहते थे। 10 बजे आओ 11 बजे जाओ। उसमें उनका काम बहुत बिजी था। उसपर गर्मी मौसम था तंखवा कम मिलती थी काम ज्यादा लेते थे। उस समय हमारी उम्र भी कम थी और ~~उतना~~ क उतना काम हम कैसे करेंगें। छोड़ दिया। फिर उसके बाद दिहाड़ी काम किया कभी काम मिलता था कभी नहीं। जो पैसा कमाते थे खर्च हो जाता था। उसके बाद फिर सुदर्शन पार्क में काम किया। महेन्द्रा जीप के पास, टैंट का काम होता था टैंट बनाते थे। हमें वहाँ किसी ने लगवाया था। वहाँ हमनें पाँच-छ महिने काम किया फिर वहाँ छोड़ दिया। फिर 62 नम्बर में आए। तब वहाँ सन् वह

में आए। तब यहाँ सन् 95 से लगा हूँ यहाँ भी
काम मंदा हो गया जब से फेक्ट्रियाँ उठ
गई है। पहले यहाँ 12 घंटा काम लगता था
पहले हमारी तंखवा 950 रु० थी, तो 1200-1300
मंज जाता था। उसके बाद मंदा-मंदा आ
गया कंपनियाँ उठने लगी अब सिर्फ 10-12
आदमी काम करते है। कोई जोनपुर का है,
कोई बनारस का है कोई इलाहाबाद का है
कोई फेजाबाद का है। ऐसा ही चलता रहा।
साहब हम ज्यादा पढ़-लिख नहीं सके। हमार
पिताजी दिहाड़ी काम करते ~~थे~~ है पहले बहुत
पहले दिहाड़ी की सही लगती थी तब खर्च
चल जाता था अब-अब बहुत मंदा चल रहा
है। बहन है 9वीं क्लास में पढ़ रही है भाई
हमारा 7वीं क्लास मे पढ़ रहा है। हमें इतने
ही पैसे मिलते है कि किसी तरह से
अपना खर्चा चला सकते है अब हम पढ़ा
लिखा नहीं सकते। यही सब है कमाने वाला
मैं ही हूँ पिता जी बूढ़े हो गए है कमा नहीं
सकते। एक छोटा भाई है 10-12 साल का है
अभी तो बच्चा है, क्या करें अभी कमा नहीं
सकता, पैसे इतने कम है पढ़ा नहीं सकता।
आजकल माहौल एसा है कि
एक फैक्ट्री में छोड़ा तो दूसरे फैक्टी मे
काम जल्दी नहीं मिलता। जब से फेक्ट्रियाँ
उठकर गई है तब से बहुत ही मंदा हो
गया है। बहुत आदमी बेरोजगार हो गए
है कहीं दिहाड़ी भी नहीं लगता है हमारे
पिताजी चौंक पर काम खोजने जाते है तो
पुलिस वाले मार कर भगा देते है। चलो
भाई रोड खाली करो, रोड खाली करो

तब आदमी क्या करेगा पैसे इतने कम है कि हम-लोगों को पेट पालना भी मुश्किल हो गया है। शादी-ब्याह कहां से करेगा। अब हमी है अब जाकर शादी किए है। जैसे वो गरीब वैसे हम गरीब। एक लड़की पैदा हो गई है अब उसके बारे में सोचते है अब हम क्या करें पढ़ाए लिखाएँ क्या करे। अब जब बड़ी होगी कैसे पढ़गी लिखगी, रोटी खिलाएँगे क्या करें नौकरी है नहीं आदमी आमदनी कम है खर्च ज्यादा क्या करें। यही सब बाते है।

बांकी गाँव में चाचा लोग है। वहाँ मकान बनाकर रह रहे है। वो पैसे वाले है। हमारा मकान कच्चा है गिर गया है पैसे है नहीं जब बनवा ले।

प्रश्न - अभी आपने बहुत जगह काम किया काफी नौकरियाँ बदली इसके पीछे आपका उद्देश्य रहा की आपको पैसे ज्यादा मिले। पहले और अभी की स्थिति में क्या लगता है कि पहले से स्थिति बेहतर हुई है या पहले से खराब हुई है।

— ऐसा है कोई स्थिति नहीं बदली जितना पहले 900 रु० मिलता था ओवर टाईम मिलाकर 1300-1400 बन जाती थी। अब 1600-1700 रु० तरवाह है। ओवर टाईम नहीं लगती महंगाई ज्यादा है कुछ भी नहीं बचता है पेट भी पालना मुश्किल हो जाता है। आदमी शादी कहाँ से करेगा, पढ़ायेगा लिखायेगा कहाँ से बच्चों का खाना हो जाए काफी है, पढ़ायेग कहाँ से।

प्रश्न - अभी आप यहाँ पर रह रहे हैं इस जगह के बारे में थोड़ा बताये क्योंकि

आपका बचपन यहाँ पर बीता है। शुरुआत में यह जगह कैसे बदा है यहाँ पर कैसे लोग रहते है? इसके बारे में कुछ बताए।

, यहाँ के लोग, किसी की नौकरी पक्की है किसी की कैसी है कहाँ की है। पहले जब मैं आया था तब यहाँ कमर तक पानी भर जाता था तब हम छोटे - छोटे थे पानी में तैर जाते थे। फिर अपने - आप ही निकल आते थे अब तो थोड़ा सही हुआ है। बाकी सभी स्थिति वैसी ही है। यहाँ आए तो हमलोगों को हर चीज की परेशानी होती है पहले हमारे हमलोग लैडिंग पर जा कर लैड्रिंग करते थे तो लैडिंग वाले पकड़ कर ले जाते थे दो - तीन दिन बंद कर देते थे कहते थे भाई पैसे दो या फिर लैंड्रिंग बद करो तो हम लैटिंग करने कहाँ जाएगे।

फिलहाल अब लैटिंग बनी है इसमें भी पानी की सुविधा नहीं रहती है पानी घंटा आता है भी 1½ घंटा आता है इसमें आदमी इतने है की पानी कम पड़ जाता है। आदमी को खाना बनाने के लिए पानी मिलजाए बहुत है बाकी यहाँ कभी - कभी पानी के लिए झगड़े हो जाता है यहाँ सभी रहते है यादव, ठाकुर, हरिजन। क्या है कि यहाँ जो छोटे स्तर के रहते है उनको दबाकर रखते है। जैसे मान लो दो चार ब्राह्मण हो गए 2-4 ठाकुर हो गए 2-4 यादव हो गए अगर 1-2 चार हरिजन का हो गया तो कहेंगे भाई इनको हटा दो। यहाँ से कोई दूसरा यहाँ आया उसको बहुत तंग करेंगे।

प्रश्न → आप सभी लोग तो बाहर से आए है कोई यू॰पी॰ का है कोई बिहार का है कोई कहीं - कहीं से आया है तो फिर यहाँ जातिवाद क्यों है?

जबकी आप सभी लोग मुश्किल से फैक्ट्री के काम कर पाते है, किसी तरह से पेट पाल पाते है। फिर भी ऐसा क्यों होता है?

→ हम तो यही जानते हैं कि कहते है गाँव में ऐसा है, ऐसे ही रहेगा मगर गाँव में तो भाईचारा रहता किंतु लोग नहीं मानते है कहीं-2 अच्छे लोग भी मिल जाते हैं, जो जातिवाद को नहीं मानते है। एकबार जब मैं बसई में काम कर रहा था तो मुझसे पूछा कि कौन सी जाति है मैं बोला हरिजन है भाई हमारे साथ पानी नहीं पीना, आपका गिलास अलग होगा हमारा अलग होगा। मैंने कहा ऐसा ही कर लेते है। वहाँ के जो मालिक है उन्हें पता नहीं रहता कुछ लोग ही गाँव के होते है वे ही ऐसा करते है। अब तो कम्पनियाँ भी उठ गई तथा काम भी ठप्प हो गया है; हम सब सोचते हैं कि हम कहाँ जायेगें जब कम्पनी बंद हो जाएगी। एक बार एक बात उठी कि बाहर कम्पनी लेकर जाओ। जब बाहर काम करेंगे तो कैसे गुजारा करेंगे। हजार-1200 रु० में किराया भी देना पडेगा। 500-600 कैसे खाना खायेंगे? यही सब बातें है। जब से कम्पनियाँ उठी है, काम धाम नहीं है। मेरे भाई भी बाहर से आये है, काम धाम नहीं है। दिहाडी पर भी ऐसा अफरा-तफरी है कि काम धाम कि एक दिन कमाओ तो 6 दिन खाओ।

प्रश्न → अब आप अपने बचपन आदि के बारे में कुछ बताइये? कैसे बीता।

→ बचपन में तो हम पहले कृपणनगर में पढ़ते थे तथा कभी-कभार लंच में भाग कर आ जाते थे। पापा कहते थे पढ़ो

नाम लिखाया है। लड्डू खरीदते, कंचे खेलते। बड़े हुए, समुदाय केन्द्र में टी०वी० देखते थे मगर बड़े होने पर एक आदमी ने हॉल दिखाया, पहली फिल्म भी चमेली की शादी। मुझे भी चोइस आ गया। अब मैं स्कूल के लिए मिलने वाले पैसे आदि चुरा कर ले जाता, सत्यम पर 40 पै० का टिकट था। बेंच में भाग कर फिल्म देखता था, कई बार मम्मी डाँट लगाती थी गंदी बात है फिल्म नहीं देखनी चाहिए मगर फिर भी नहीं मानता था। कई बार मम्मी घर में घुसने नहीं देती, मारती उसके बाद पाँचवी तक क्लास की, मास्टर का नाम छोटेलाल था। मैं पढ़ने लिखने में कमजोर था मगर तख्त पर हमारी लिखाई काफी अच्छी थी। मैं भी गाँव में अक्सर तख्त पर लिखता और एक बार फर्स्ट आया। फिर छोड़ दिया। यहाँ भी यार-दोस्त थे। गरीब थे पाँचवी तक पढ़ छोड़ दिया मगर हमारे यार दोस्त आगे भी पढ़े। दीवाली है, हमारे धूम धाम से मनाते थे, होली के दिन कुछ अच्छा नहीं लगता चार-पाँच पकड़कर इतनी तेजी से मुँह में रंग लगाते है कि जान निकल जाये, प्यार से रंग खेलना ठीक है। बाकी कभी कभार झगड़ा भी हो जाता है। हम तो दारू नहीं पीते जो दारू पीते हैं वही झगड़ा करते है। दारू पीने से दिमाग ठीक नहीं रहता, एक बार क्या हुआ कि मम्मी ने बोला स्कूल जाओ, मैं बोला नहीं जाना पापा ने बोला क्यों नहीं जाएगा। मैं बोला कमाने वाला एक आदमी है. छोटे भाई बहन भी है कहाँ से पढ़ूं। तब से मैं पहले भी बता चुका हूँ कि काम करने

लगा यहाँ फिलहाल अभी कर रहा हूँ 62 नम्बर में जहाँ गेअर बनते हैं 1995 से लगा हूँ, ओवर टाइम के भी सोचते हैं यहाँ कहीं नहीं मिलता, सोचते हैं खर्चा चल जायेगा 200-400. बन जायें कहीं भी नहीं मिलता लोग कहते हैं भाई काम नहीं है।

ऐसा है कि यार-दोस्त मिल जाते हैं तो मजे हो जाते हैं फिल्म दिखाने के जाते हैं। पहले हुआ कि जब पढ़ते थे तो दो-चार शैतान लड़कों ने कहीं कुछ न कुछ लिख दिया और मास्टर जी ने कहा कन्हैया तूने किया और चार-पाँच ईंट रख दी, मुर्गा बना दिया फिर भी हमने रोया नहीं, मास्टर जी ने कहा कोई असर नहीं पड़ता मैंने कहा कि नहीं गलती नहीं की तो रोऊँ क्यों। कई बार छोटे-छोटे लोग भी कभी कुछ सोचते हैं मगर कुछ भी नहीं होता हमारा भी दिल करता है गाने का मगर नहीं गा पाते, अमीर होते तो गाते। हम भी स्टेज पर जाने की सोचते हैं मगर पैसा नहीं है, हमारे यार दोस्त भी गाना लिखते हैं, कहते हैं तुम गाओ तुम्हारी आवाज अच्छी है। मगर हम कहते हैं गरीब आदमी हैं गाकर क्या करें। अमीर होते तो तुम लोगों का भी नाम होता, गाने लिखते हो। अलबम आते। ऐसा है कि एक कहावत है कि मिल जाते हैं जब धन पास होता है, दूर जाती है कभी गहरी दोस्ती जब पैसा नहीं होता जब पैसा न होतो अच्छे से अच्छे दोस्त साथ छोड़ देते हैं।

प्रश्न → तो कन्हैया लाल जी आप कहते हैं गाने का दिल करता है जरा गाना सुना दीजिए, एक दो।

→ चलो आप गाने कह रहे है तो दुगोला का सुनाता हूँ, एक दो कड़ियाँ आती है गाता हूँ — अरे खालूँ गौरिआ (समझ में नहीं आया) — —
एक नया अल्बम का गाना सुनाता हूँ काफी अच्छा लगता है — दिल लेकर क्यों तूने मुझको तड़पाया है — — 3 गैरों से मिल-मिल कर - 2 मुझे खूब सताया है। दिल ले — — । झूठे तेरे वादे है, झूठी है कसमें तेरी - इतना बता दें तूने मुझे क्यों इतना सताया, तु मुझसे क्यो रूठी — — — । मैंने तो दिल अपना तेरे कदमों में बिछाया है।

प्रश्न → तो कन्हैयालाल जी आपका गाना तो काफी रोमान्टिक है? जरा आप अपनी शादी के बारे में बताईये, कैसे हुई आपकी शादी।

→ शादी तो हमारी, आजकल का माहौल है कि लड़का लड़की को देखकर शादी करता है। हमारी घरवाली को तो हमारी मामी, माँ, चाची, यही सब देखने गये थे। तो हमारी माँ ने कहा कि तुम भी देख आओ तो माँ से मैंने कहा जब माँ देख आई तो बेटे ने भी देख ली। माँ ने कहा नहीं देख कर आओ तो मैंने फिर कहा। माँ को पसंद है तो बेटे को पसंद है। कभी कोई भी माँ बाप अपने बेटे के लिए गलत नहीं सोचता तथा हमारी शादी गरीबी में हुई है, न हम कुछ लेने भर के थे, न वो कुछ देने भर के थे। जितना हमारा है उतना ही वो भी है। इसलिए गरीबी में शादी हुई है।

प्रश्न → अच्छा कन्हैयालाल जी जरा आपनी पत्नी के बारे में बताईये कैसी है पढ़ी लिखी है कैसी है?

उत्तर → पत्नी तो हमारी पढ़ी लिखी नहीं है। हमारे ससुर जो है उनकी तीन ही लड़की है एक

बड़ी लड़की है जिसकी शादी हो चुकी है, बीच वाली से हमारी हुई है, अभी हमारी वाली से छोटी की शादी भी करनी है। वो गरीब ही है कमाने-धमाने वाला लड़का नहीं था तो कहाँ से पढ़ते अंगूठा छाप है।

प्रश्न→ एक बात बताईये जैसे आपको कम वेतन प्राप्त होता है तो आपकी पत्नी किस तरह से आपका खर्चा चलाने में सहायता करती है?

→ फिलहाल अभी तो, हमारी घरवाली कहती है कि तुम घर-वर भी नहीं बनवाये। हम कहते हैं तुम्हारे सामने ही सब कुछ है वेतन तो कम मिलता है, अभी हमारी लड़की पैदा हुई है तीन साल शादी को हुऐ है घर द्वार कैसे बनायेंगे और कैसे बच्चों को खर्चा वर्चा देगें। यही सब चिंता लगी रहती है मगर चिंता करने से क्या होगा। आदमी को जो होगा वो करना ही पड़ेगा, हम भी यही सब सोचते है, यही सब है। घर-वर कैसे बनायें छोटी बहन है सोचते हैं पहले उसकी शादी करनी, दहेज देकर कैसे भी शादी तो करनी ही है। तभी घर द्वार बनायें। चाहे कर्ज लें शादी तो करनी ही है।

प्रश्न→ तो यहाँ पर क्या आपका अपना घर नहीं, किराये पर रहते है?

→ नहीं यहाँ तो अपना ही घर है, किराया देना पड़ता तो हम नहीं रह सकते क्योंकि हम 7-8 परिवार है तथा किराया देना होता तो 1000-1500/- तो वही ले लेते। क्या कमाते क्या खाते, क्या बचाते। घर अपना है।

प्रश्न→ कन्हैयालाल जी तो आज के 20 साल बाद आप अपने को किस रूप में देखते है? आपकी स्थिति क्या होगी?

→ बचपन से आज तक पच्चीस-26 साल उम्र होगी

बचपन गुजर गया माँ बाप ने खिलाया पिलाया हम सोचते हमारी पक्की नौकरी नहीं है और क्या कमायेंगे कैसे करेंगे। गाँव में भी घर कच्चा है गिर पड़ा है और खेत वगैरह पर चाचा खेती करते है। क्या होगा कोई नहीं जानता, क्या होगा, क्या बनेगा? हम आपको क्या बता दे। सब ऊपर वाले के हाथ में है।

प्रश्न→ फिर भी कुछ कि 20 साल बाद कैसी स्थिति होगी?

→ बचपन से आज तक मैं दुःख ही झेलता आया हूँ, दुःखी ही रहा हूँ अभी भी हूँ लेकिन कभी भी हार नहीं मानी है तथा अभी मेरी तबियत खराब हो गई थी बिलडिंग में दवा कराया। दाये हाथ के पीछे जख्म हो गया था, डॉक्टर साहब ने कहा कि 8 महीने दवा चलेगी मगर दवाई लिखी, एक हफ्ते की दवा 350 की मिली। डॉक्टर से पूछा कि बड़ी मँहगी है मेरे को कहा ठीक होना है तो यही खानी पड़ेगी। तब मैंने 4-5 महीने 1000/- प्रति महीने दवा खाई कैसे-कैसे उधार लेकर और जीजा जी से पैसे लिये। इसके बाद डॉक्टर साहब ने दवा चेंज कर दी तो 200-250 की दवा आने लगी 9-10 महीने। अब यही है कि हम गरीब हैं। बड़े आदमी के लिये एक दो हजार रु० कुछ भी नहीं है। हम भी यही सोचते हैं कि यदि हम बड़ा होते तो अच्छे-अच्छे होटल में खाते। हमने तो अच्छी-अच्छे-अच्छे होटलों की शक्ल भी नहीं देखी है तथा बाहर से देखा है एक चौकीदार खड़ा रहता है और अंदर जाने भी लगो तो रोक देता है कि ऐ कहाँ जा रहे हो क्या कोई धर्मशाला है। सिर्फ हम नाम सुने है। हम इतने गरीब है कि रेस्टोरेंट तो क्या हम घर पर भी नहीं खा पाते हैं तो हम इतना काम करते है लेकिन------। हम अस्पताल गये तो इतने आदमी वहाँ

थे कि जैसे सारी दुनिया बीमार है तब मुझे हौ-
सला --- कि हम ही नहीं काफी लोग परेशान है।
कुछ हमसे भी ज्यादा खराब स्थिति मैं है। मैं
सोचता हूँ कि यदि मै अच्छा अमीर होता तो
इनकी सहायता करता जबकि कुछ अमीर लोग
तो 50 रु० तंख्वाह बढ़ाने को राजी नहीं है और
पुलिस वाला आ जायेगा तो 10-15000 रु दे देंगे।
हमको बोलेंगे कि कोई लाटरी है।